पाठ 11

उकारान्त और इकारान्त पुंलिंग संज्ञाएँ, इदम् और स्व सर्वनामों के रूप, भूतकाल (लङ् लकार)।

11.1 स. अब हम उकारान्त और इकारान्त पुंलिंग संज्ञाओं के बारे में पढ़ेंगे। **गुरु** उकारान्त और **मुनि** इकारान्त पुंलिंग संज्ञाएँ हैं। इन दोनों संज्ञाओं के रूप नीचे दिए गए हैं :

	गुरु			**मुनि**		
	एकव.	द्विव.	बहुव.	एकव.	द्विव.	बहुव.
प्रथमा	**गुरुः**	**गुरू**	**गुरवः**	**मुनिः**	**मुनी**	**मुनयः**
द्वितीया	**गुरुम्**	**गुरू**	**गुरून्**	**मुनिम्**	**मुनी**	**मुनीन्**
तृतीया	**गुरुणा**	**गुरुभ्याम्**	**गुरुभिः**	**मुनिना**	**मुनिभ्याम्**	**मुनिभिः**
चतुर्थी	**गुरवे**	**गुरुभ्याम्**	**गुरुभ्यः**	**मुनये**	**मुनिभ्याम्**	**मुनिभ्यः**
पंचमी	**गुरोः**	**गुरुभ्याम्**	**गुरुभ्यः**	**मुनेः**	**मुनिभ्याम्**	**मुनिभ्यः**
षष्ठी	**गुरोः**	**गुर्वोः**	**गुरूणाम्**	**मुनेः**	**मुन्योः**	**मुनीनाम्**
सप्तमी	**गुरौ**	**गुर्वोः**	**गुरुषु**	**मुनौ**	**मुन्योः**	**मुनिषु**

टिप्पणी: गुरुणा (3-1) और **गुरूणाम्** (6-3) में **न्** को **ण्** होता है (देखिए अनुभाग 3.3 संधि)। इन संज्ञाओं के संबोधन कारक के एकवचन के रूप क्रमशः **गुरो** और **मुने** हैं।

11.2 संधि. संस्कृत में एक ओर **इ-ई, ए-ऐ** और **य्** (सभी तालव्य ध्वनियों) में तथा दूसरी ओर **उ-ऊ, ओ-औ** और **व्** (सभी ओष्ठय ध्वनियों) में निकट का संबंध है। यदि आप **गुरु** और **मुनि** के रूपों पर ध्यान दें तो आप देखेंगे इन दोनों प्रकार की ध्वनियों में बिल्कुल एक जैसे परिवर्तन होते हैं। जिस प्रकार **गुरु** संज्ञा का **उ** बदलकर **ऊ ओ, औ, व्** या **अव्** हो जाता है, ठीक उसी प्रकार **मुनि** संज्ञा का **इ** बदलकर **ई, ए, ऐ, य्,** या **अय्** हो जाता है। यदि आप इस प्रकार की समानताओं पर ध्यान देंगे तो आपको संज्ञाओं के विभिन्न रूपों को समझने में और अधिक सुविधा होगी।

11.3 स. नीचे कुछ उकारान्त और इकारान्त पुंलिंग संज्ञाओं के प्रथमा विभक्ति एकवचन के रूप दिए हैं। उनसे शेष रूपों को बनाने का अभ्यास कीजिएः

तरुः (पेड़)
शत्रुः (दुश्मन)
पशुः (जानवर)
ऋतुः (मौसम)
मृत्युः (मौत)
बन्धुः (मित्र)
कपिः (बंदर)
गिरिः (पहाड़)
अग्निः (आग)
कविः (कवि)
आदिः (आरम्भ)
ऋषिः (ऋषि)

11.4 वि. ऊपर बताया जा चुका है कि विशेषणों के रूप संज्ञाओं की तरह चलते हैं। विशेषणों के रूप हमेशा उन संज्ञाओं के लिंग, कारक और वचन के अनुसार होते हैं जिनकी ये विशेषता बताते हैं, जैसेः- उकारांत विशेषण **बहु.** के पुंलिंग के रूप उकारांत पुंलिंग संज्ञाओं की तरह बनते हैं (**बहुः, बहू, बहवः** आदि)। इकारान्त **'आदि'** शब्द को समास के अंत में लगाने पर यह विशेषण का भाव देता है, और इसके रूप इकारान्त संज्ञाओं की तरह चलते हैं, जैसेः **सिंहादयः** (शेर आदि)।

11.5 प. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

क. 1. तस्मिन् गिरौ सघनं[1] वनम् अस्ति। 2. तत्र बहवः पशवः वसन्ति। 3. तेषु सिंहाः, व्याघ्राः[2], गजाः[3], भल्लूकाः[4], मृगाः[5], कपयः[6] च सन्ति। 4. वने बहवः तरवः अपि रोहन्ति। 5. तरुषु कपयः कूर्दन्ति[7]। 6. तरूणां छाया अति शीतला। 7. छायायां पशवः विश्रामं कुर्वन्ति। 8. मृगाणां भोजनं घासः अस्ति। 9. गजाः तरूणां पत्रणि कोमलाः शाखाः[8] च खादन्ति। 10. सिंहादयः पशवः अन्यान् पशून् भक्षयन्ति। 11. तस्मिन् वने एकः तडागः[9] अपि अस्ति। 12. ग्रीष्मे ऋतौ पशवः तडागस्य समीपे[10] एव वसन्ति। 13. रात्रै जलं पानाय[11] ते तडागम् आगच्छन्ति।

(**शब्दार्थः** 1. घना, 2. बाघ, 3. हाथी, 4. भालू, 5. हिरण, 6. बंदर, 7. **कूर्द**-कूदना हैं, 8. **शाखा**-टहनी, 9. तालाब, 10. पास, 11. पीने के लिए)

ख. वने एकः आश्रमः अपि अस्ति। 2. तत्र बहवः[1] मुनयः वसन्ति[2]। 3. मुनयः नगरेभ्यः दूरे वसन्ति। 4. ते शास्त्राणि पठन्ति ध्यानं च कुर्वन्ति। 5. तत्र तेषां गुरुकुलम् अपि अस्ति। 6. मुनीनां शिष्याः अपि मुनिभिः सह तत्र वसन्ति। 7. गुरोः कुलं गुरुकुलं भवति। 8. कुलस्य अर्थः परिवारः। 9. गुरुकुलं गुरोः परिवारः अस्ति। 10. शिष्याः तत्र गुरुभिः सह वसन्ति। 11. ते तत्र एव पठन्ति। 12. गुरूणां शिक्षा[3], आदर्शः, उपदेशः च शिष्याणां हिताय[4] भवन्ति।

(**शब्दार्थः** 1. बहुत-से, 2. रहते हैं, 3. उपदेश, शिक्षा, 4. कल्याण के लिए)

ग. 1. अभिमानः, आलस्यं, क्रोधः च मनुष्यस्य शत्रवः सन्ति। 2. नम्रता, उद्योगः, शान्तिः च तस्य बन्धवः। 3. साधवः सदा सत्यं वदन्ति[1]। 4. जनानां हृदये मृत्योः[2] भयं सदा एव भवति। 5. कवयः काव्यं रचयन्ति[3]। 6. वयं तेषां रम्यं काव्यं पठामः। 7. अग्निः काष्ठं[4] शुष्काणि पत्राणि च दहति[5]। 8. ज्ञानाग्निः मनुष्यस्य अज्ञानं दहति। 9. पशुषु मनुष्येषु च ज्ञानस्य एव भेदः[6] अस्ति। 10. ज्ञानम् एव मनुष्याणां परमः निधिः। 11. वसन्तः सर्वेषु ऋतुषु श्रेष्ठः अस्ति। 12. बालकः कपिं दृष्ट्वा[7] प्रसन्नो भवति। 13. अग्नौ तापः[8] भवति। 14. सः बन्धूनां मध्ये स्नेहेन वसति।

(**शब्दार्थः** 1. बोलते हैं, मृत्यु काय 3. रचना करते हैं, 4. लकड़ी को, 5. जलाती है, 6. अंतर, फ़र्क, 7. देखकर, 8. गर्मी)

11.6 सर्व. हम यह पढ़ चुके हैं कि एतत् (**एषः पु., एषा स्त्री. एतद् नपुं.**) सर्वनाम का प्रयोग पास के व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए होता है। एक अन्य सर्वनाम **इदम्** का प्रयोग भी इसी प्रयोजन के लिए होता है। **इदम्** के रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। इसके रूप आगे दिए गए हैं :

इदम्

	पुंलिंग			स्त्रीलिंग		
	एकव;	द्विव;	बहुव;	एकव;	द्विव;	बहुव;
प्रथमा	**अयम्**	**इमौ**	**इमे**	**इयम्**	**इमे**	**इमाः**
द्वितीया	**इमम्**	"	**इमान्**	**इमाम्**	"	**इमाः**
तृतीया	**अनेन**	**आभ्याम्**	**एभिः**	**अनया**	**आभ्याम्**	**आभिः**
चतुर्थी	**अस्मै**	"	**एभ्यः**	**अस्यै**	"	**आभ्यः**
पंचमी	**अस्मात्**	"	"	**अस्याः**	"	"
षष्ठी	**अस्य**	**अनयोः**	**एषाम्**	**अस्याः**	**अनयोः**	**आसाम्**
सप्तमी	**अस्मिन्**	"	**एषु**	**अस्याम्**	"	**आसु**

इदम् के नपुंसक लिंग के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के रूप **इदम्, इमे, इमानि** हैं। अन्य विभक्तियों के रूप पुंलिंग के समान हैं।

11.7 क्रि. संस्कृत में भूतकाल : संस्कृत में तीन प्रकार के भूतकाल हैं। जिन्हें तीन लकारों **लङ्** (अनद्यतन भूत), **लिट्** (परोक्ष भूत) और **लुङ्** (सामान्य भूत) के द्वारा प्रकट किया जाता है। पहले इन तीनों लकारों के प्रयोग में समय की दूरी या निकटता की दृष्टि से अन्तर था पर बाद की संस्कृत में यह अन्तर प्रायः समाप्त हो गया और इनका एक दूसरे के लिए प्रयोग होने लगा। इनमें से पहले हम लङ् लकार की रचना और प्रयोग देखेंगे।

अ– वर्ग के लङ् लकार का **अङ्ग** बनाने की प्रक्रिया वही है जो हमने लट् लकार का अङ्ग बनाते समय पढ़ी थी (देखिए 5.2 क्रि.) परन्तु लङ् लकार में धातु से पूर्व **अ** जोड़ा जाता है। इस प्रक्रिया में निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य है।

क) धातु से पूर्व **अ** जोड़ा जाता है। इस प्रकार **पठ्** का अंग **अ-पठ** और **खाद्** का अंग **अ-खाद** हो जाता है। यही बात अन्य धातुओं पर भी लागू होती है।

ख) यदि धातु से पूर्व कोई उपसर्ग हो तो **अ** उपसर्ग और धातु के बीच में जुड़ता है, जैसेः **प्र-विश** → **प्र–अ–विश** = **प्राविश।** (खंड 8.5 (क) संधि)

ग) यदि धातु के आदि में स्वर हो तो **अ** उस स्वर के साथ मिल जाता है और उस स्वर को वृद्धि हो जाती है; जैसेः **अ + इच्छ = ऐच्छ।**

लङ् लकार में धातु के साथ लगने वाले अन्त्य प्रत्यय आगे दिए हैंः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-त्**	**-ताम्**	**-अन्**
मध्यम पुरुष	**-स् (:)**	**-तम्**	**-त**
उत्तम पुरुष	**-अम्**	**-व**	**-म**

मध्यम पुरुष एकवचन का **स्** विसर्ग (:) में बदल जाता है। नीचे **गम्** (**गच्छ्**) धातु के लङ् लकार के रूप दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**अगच्छत्**	**अगच्छताम्**	**अगच्छन्**
मध्यम पुरुष	**अगच्छ:**	**अगच्छतम्**	**अगच्छत**
उत्तम पुरुष	**अगच्छम्**	**अगच्छाव**	**अगच्छाम**

पुष् धातु के लङ् लकार के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**अपुष्यत्**	**अपुष्यताम्**	**अपुष्यन्**
मध्यम पुरुष	**अपुष्य:**	**अपुष्यतम्**	**अपुष्यत**
उत्तम पुरुष	**अपुष्यम्**	**अपुष्याव**	**अपुष्याम**

हम **भू, कुप्, प्रच्छ्** (**पृच्छ्**) और **कथ्** धातुओं के भूतकाल की रूपावली नीचे दे रहे हैं। सुविधा के लिए हम धातुरूपों के पुरुष और वचन को सूचित करने के लिए क्रमश: **I-i** रोमन संख्याओं का प्रयोग करेंगे:

	III-i	**III-ii**	**III-iii**	**II-i**	**II-ii**	**II-iii**	**I-i**	**I-ii**	**I-iii**
भू	**अभवत्**	**-ताम्**	**अभवन्**	**अभव:**	**-तम्**	**अभवत**	**अभवम्**	**अभवाव**	**अभवाम**
कुप्	**अकुप्यत्**	**-ताम्**	**अकुप्यन्**	**अकुप्य:**	**-तम्**	**अकुप्यत**	**अकुप्यम्**	**अकुप्याव**	**अकुप्याम**
प्रच्छ्	**अपृच्छत्**	**-ताम्**	**अपृच्छन्**	**अपृच्छ:**	**-तम्**	**अपृच्छत**	**अपृच्छम्**	**अपृच्छाव**	**अपृच्छाम**
कथ्	**अकथयत्**	**-ताम्**	**अकथयन्**	**अकथय:**	**-तम्**	**अकथयत**	**अकथयम्**	**अकथयाव**	**अकथयाम**

11.8 क्रि. अस् (होना) और **कृ** (करना) धातुओं का बार-बार प्रयोग होता है, इसलिए इनके **लङ् लकार** के रूप नीचे दिए जा रहे हैं:

अस्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**आसीत्**	**आस्ताम्**	**आसन्**
मध्यम पुरुष	**आसी:**	**आस्तम्**	**आस्त**
उत्तम पुरुष	**आसम्**	**आस्व**	**आस्म**

कृ

प्रथम पुरुष	**अकरोत्**	**अकुरुताम्**	**अकुर्वन्**
मध्यम पुरुष	**अकरो:**	**अकुरुतम्**	**अकुरुत**
उत्तम पुरुष	**अकरवम्**	**अकुर्व**	**अकुर्म**

11.9 सर्व. **स्व** एक निजवाचक सर्वनाम है जिसका अर्थ है 'अपना'। इसका सभी पुरुषों के लिए प्रयोग होता है। इसके रूप सर्वनाम **सर्व** की तरह तीनों लिंगों में बनाए जा सकते हैं।

स्वः, स्वौ, स्वे; स्वा, स्वे स्वाः; स्वं, स्वे, स्वानि आदि, जैसे :

सा दर्पणे स्वां पश्यति– वह शीशे में स्वयं को देख रही है।

सः सर्वदा स्वं वचनं पालयति–वह हमेशा अपने वचन को पूरा करता है।

स्व का प्रयोग प्रायः समास के प्रथम भाग के रूप में होता है, जैसेः

ते स्वनगर गच्छन्ति–वे अपने शहर जा रहे हैं।

स्वभाषणं तस्मै बहु रोचते–उसे अपना भाषण बहुत अच्छा लगता है।

ताः बालिकाः स्वगृहं भूषयन्ति–वे लड़किया; अपना घर सजा रही हैं।

माता स्वपुत्रे स्निह्यति–माता अपने पुत्र से प्यार करती है।

11.10 प. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. अहं ह्यः[1] प्रातःकाले भ्रमणाय अगच्छम्। 2. किं यूयमपि भ्रमणाय अगच्छत? 3. न, वयं भ्रमणाय न अगच्छाम। 4. ते बालकाः इमं पाठम् अपठन्। 5. अपि भवान् अपि इमान् पाठान् अपठत् ? 6. आम्, अहम् इमान् पाठान् अपठम्। 7. ते बालकाः ह्यः किम् अकुर्वन् ? 8. ते वाटिकायाम् अक्रीडन्। 9. ताः बालिकाः ह्यः किम् अकुर्वन् ? 10. ताः पुष्पैः मालाः अरचयन्[2]। 11. सः चौरः किम् अचोरयत् ? 12. सः तस्मात् गृहात् आभूषणानि[3] अचोरयत्। 13. भवतः पिता च माता च ह्यः कुत्र आस्ताम् ? 14. मम पिता च माता च ह्यः स्वगृहे एव आस्ताम्। 15. अपि युवाम् इमानि चित्रणि अपश्यतम् ? 16. आम्, आवाम् इमानि चित्राणि अपश्याव। 17. भवान् ह्यः किम् अकरोत् ? 18. अहं ह्यः किमपि न अकरवम्।

(**शब्दार्थ**: 1. (बीता हुआ) कल; 2. बनाईं; 3. गहने)

11.11 अ. प्रत्येक वाक्य के सामने कोष्ठक में दी गई धातुओं के लङ् लकार के सही रूपों से वाक्यों में रिक्त स्थान भरिएः

i. सः अस्मिन् नगरे ..... (वस्)

ii. शिक्षकः एभ्यः छात्रेभ्यः ..... । (कुप्)

iii. इमाः बालिकाः वाटिकायां ..... । (नृत्)

iv. अपि यूयं इमान् जनान् ..... ? (निन्द्)

v. ह्यः अहं स्वमित्रम् एकं पत्रं ..... । (लिख्)

vi. एभ्यः वृक्षेभ्यः पत्राणि ..... । (पत्)

vii. अस्माकं माता अस्मभ्यं भोजनं ..... । (पच्)

viii. वयं कक्षायां बहून् प्रश्नान् ..... । (पृच्छ्)

ix. अहं सदा शिक्षकस्य आज्ञां ..... । (पाल्)

x. त्वं ह्यः किं ..... ? (कृ)

अभ्यासों के उत्तर

11.5 प. क) 1. उस पहाड़ पर घना जंगल है। 2. वहाँ बहुत से जानवर रहते हैं। 3. उनमें शेर, बाघ, हाथी, भालू, हिरण और बंदर हैं। 4. जंगल में बहुत.से पेड़ भी (उगते) हैं। 5. पेड़ों पर बंदर कूदते हैं। 6. पेड़ों की छाया बहुत ठंडी है। 7. छाया में जानवर आराम करते हैं। 8. हिरणों का आहार घास है। 9. हाथी पेड़ों के पत्तो और कोमल टहनिया; खाते हैं। 10. शेर आदि जानवर दूसरे जानवरों को खाते हैं। 11. उस जंगल में एक तालाब भी है। 12. गर्मी के मौसम में जानवर तालाब के पास ही रहते हैं। 13. रात को पानी पीने के लिए वे तालाब पर आते हैं।

ख) 1. जंगल में एक आश्रम भी है। 2. वहाँ बहुत से मुनि रहते हैं। 3. मुनि नगरों से दूर रहते हैं। 4. वे शास्त्र पढ़ते हैं और ध्यान करते हैं। 5. वहाँ उनका गुरुकुल भी है। 6. मुनियों के शिष्य भी मुनियों के साथ वहाँ रहते हैं। 7. गुरु का कुल गुरुकुल होता है। 8. कुल का मतलब परिवार होता है। 9. गुरुकुल गुरु का परिवार होता है। 10. शिष्य वहाँ गुरुओं के साथ रहते हैं। 11. वे वहीं पढ़ते हैं। 12. गुरुओं की शिक्षा, आदर्श और उपदेश शिष्यों के कल्याण के लिए होते हैं।

ग) 1. अभिमान, आलस्य और क्रोध मनुष्य के दुश्मन हैं। 2. नम्रता, परिश्रम और शान्ति उसके मित्र हैं। 3. अच्छे लोग सदा सच बोलते हैं। 4. लोगों के दिल में मृत्यु का डर हमेशा रहता है। 5. कवि लोग काव्य की रचना करते हैं। 6. हम उनके सुंन्दर काव्य को पढ़ते हैं। 7. आग लकड़ी और सूखे पत्तों को जलाती है। 8. ज्ञान की अग्नि मनुष्य के अज्ञान को भस्म कर देती है। 9. पशुओं और मनुष्यों में केवल ज्ञान का अंतर है। 10. ज्ञान ही मनुष्यों का सबसे बड़ा खज़ाना है। 11. वसन्त ऋतु सब ऋतुओं से अच्छी है। 12. लड़का बंदर को देखकर खुश होता है। 13. आग में गर्मी होती है। 14. वह (अपने) संबंधियों के साथ प्यार से रहता है।

11.10 प. 1. मैं कल सुबह घूमने के लिए गया। 2. क्या आप लोग भी घूमने के लिए गए ? 3. नहीं, हम घूमने के लिए नहीं गए। 4. उन लड़कों ने इस पाठ को पढ़ा। 5. क्या आपने इन पाठों को पढ़ा ? 6. हाँ, मैंने इन पाठों को पढ़ा। 7. उन लड़कों ने कल क्या किया ? 8. वे बगीचे में खेले। 9. उन लड़कियों ने कल क्या किया ? 10. उन्होंने फूलों से मालाएँ बनाईं। 11. उस चोर ने क्या चुराया? 12. उसने उस घर से गहने चुराए। 13. आपके पिता और माता कल कहाँ थे? 14. मेरे पिता और माता कल अपने घर में ही थे। 15. क्या तुम दोनों ने इन चित्रों को देखा? 16. हाँ, हम दोनों ने इन चित्रों को देखा। 17. कल आपने क्या किया? 18. कल मैंने कुछ भी नहीं किया।

11.11 अ. **i**) अवसत्, **ii**) अकुप्यत् , **iii**) अनृत्यन्, **iv**) अनिन्दत, **v**) अलिखम्, **vi**) अपतन्, **vii**) अपचत्, **viii**) अपृच्छाम, **ix**) अपालयम्, **x**) अकरोः।